

सि व व दि १३ रु स वी य मि ध य का दि च ह ले ॥ लि षी न का थ का हा न य
व जा वा य मू नि कु स ति न वी य मि षा ॥ दान प न न पा ल म ल न स र
ध् पा नि म हा ग व या वि स र द या वा वि क या सि रा का व य प्र वा ऊ न थ
अ वि उ उ त् य ति रु या अ थ अ न्ना म स पू जा य ति हा ३ न रा न का न
ता याः श्री ३ ह व ऊ ने वा स्मा या न इ ह व पा थ स ह १ ना व श दि १ कं

नामधर्मवि॥ ॥मधुसूदनमहामनिकर्तृकशक्तिनेपुर्वदिदह
 दंजंविदिपं२मपन॥महायनिउरुनक्रुयुवनेयवदमेपचुठि
 नव्यापियाला॥कि॥नमपचनुहुविश्वेगुमिजिताविचोहिन
 विश्वरुनयंचमनति२रुष्टदियाननावहंगीकिनमानसा
 हनंशुलुयमिमिचघनधावचय्या॥ ॥आमवदमसया
 उपद्विपचाउा द्विपविजातुधानं२स्वसनचाउयचउ

विदिगातुवनचाउपद्विपग्रीश्वसुपचगु॥ ॥दिनद
 प्रप्राचियनचनधिनयाचियसफत्रष्टादचचंवियाज
 २रुष्टचयचलाउदिवियमायकाचका मनिक्चनिधि
 निषिलवदयंमि॥ ॥गुचुचलनगिडावसारुगमीय
 निरावनामनकुसुमउर्दकायचिसंरुलिपूजा२पनडा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पवित्रावधिसकपप्रविपूत्रितरुवज्जबनिधिसंगनवत्तसहु
उमं॥ ॥ **नागागंधारयविः** ॥ **गामकूदहनपक्कज्ञानत्त**
वपे २ पक्कमिन्नवसपंक्कमविपूजिया॥ ६ ॥ **गुत्ताद्वी**
वनिवायंतिरुवनविवा २ विवमवायंनकसमयाज्ञानदु॥
विचंविमम्वत्तसहजाशानं ३ २ क वं कामवासानहदयाश

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नडे॥ ॥ **पक्कवूद्धपक्कस्संधस्ववपे २ दवास्सन्नवप**
मदिनहदया॥ ॥ **उत्ता ४ हुंतिस्संधनकवित्ता २ ३**
मवृष्टा ॥ **धानिविचमाज्ञानडे॥** ॥ **नागापथमंजा**
वि॥ अनिवन्नवज्जवडाहडासासमवमधुलववावा
या २ वज्जपंक्कवसन्नजालसंपदिहदिमवमधुलव

कृत्वा या ॥ ६ ॥ अमन्त्रकृत्वा यिया अन्यकृत्वा अत्रीग
 नहं नृशकृत्वा यिया २ वज्रवा वाहि शालिंशु संवत्त क
 न यिया ॥ ॥ अहि संवित्रं विद्यध्वनः अहिं अहिं न
 हिं नहिं अरु अमसाने २ अरु न सर्वदेव वज्रपादस
 दनी मिलंति रुयनसंहा व ॥ ॥ अरु वन पुक्ता प्रकु

वा यसरु वा अरु वन पुक्ता प्रकु विनं वीना २ विनी
 पुवननं अनात सं प्रसादिल रुतिं हु उ यका का वा ॥
 ॥ अहि निमनगु व वा वं पुवां हु व अदि हु ल ल व अ ल व
 २ अ व म म व न रु य व ध न अदि हु व रु य मा न रु ति
 य स हा व ॥ ॥ **वागनाद** ॥ व क व व न नि नि वा य

अरु वन पुक्ता प्रकु

नमो नमि २ रुखा गदसह ऊप्रहवधकिवन्य ॥ ध्र ॥ पुह
 द्वाद विवात्रनिमहासामकिद वि २ ऊग वपुमादि वमय नसनाह ॥
 ॥ आगमव्यादयु नानवर्षाने २ ऊगधवमदि क्तागुत्र उय
 दस ॥ ॥ यच्छ्रवध सावत्रय ऊगु २ सयात्र ऊगीनिमा
 मं ह नू उं उह नू उं ॥ ॥ स गण नू च वन सी वंग न ध वि

या २ रुन श्री वां क व ऊ स ना स व नू य ॥ ॥ वाग
 व वि ॥ नमः हं रुका वून नू प ध व २ स्व रु विस त्व उजा
 ध व ॥ ध्र ॥ नना हं २ नना हं हं नना न न हं हं हं ॥ ॥
 हं दा शालिंग म ऊग ध व २ व ऊ घं ४ मू द्रा ध व ॥ ॥
 ध व न स सं खून ध व २ स व द स सा हि य व द्र म व ॥

६८१

नमो नमि
 २ रुखा गदसह
 ऊप्रहवधकिवन्य

विष्णु

६

॥ मायादहलिनजंगुलि २ साहियकनूक्षसखमई ॥

॥ नाशः भृंगालमानः ॥ प्रिवक्रवविसमिधुनमाभं
यितिशानदमृन्निधना २ वज्रवा नाहिशालिगनस
खमना नानाश्रीयस्मिमलीजावा ॥ ६ ॥ ननाईई २ नना
ननईईई ॥ ॥ निनयधुवकुवकप्रतिमस्वनिनय

यवमात्रानदमृन्निधना २ विम्ववज्ररुद्धवद्रजटाम
कूटधामिहाडाज्जरवनससारिता ॥ ॥ वज्रघष्ठा
अवर्मठमृन्निधना २ विम्ववज्ररुद्धवद्रजटाम
निकपावप्रवभपाभयीभुवयुक्तभीयधोयियाघुवर्म
कहिव्यस्थिता ॥ ॥ दिगंविदिगंकाकासादिजमदा

राजाशेन १

किनिदवि सहजा नानद मन्तिधवा २ न मामि २ श्रीवकु
 संवयै नाया सनगुन् चनधना नाधिता ॥ ॥ **नागाः**
हा ॥ हाद्राशरुलन क्रियायिल सम्वज्ज नयिकं वा नि
 प्रेवासा २ कुलवानं ल्यम छिया म्सा नम कटका ॥ दिशं व
 या ॥ ५ ॥ नयेयमा नू सन्धन नाया समन मुद्रनिमा न

को यो २ ह म वि वाहिनि वज्र वा नाहि रुजमहिमा नसाया
 ॥ ॥ सा निशयने वन म ह म यने कर्पूल रुद्र नं वी
 या २ गगन नि वा वन वं दि य मा ज म नू स गुल रु वलि ना
 ॥ ॥ उियध उख न युं द्वा दिं ग य स म्ब न य यि स यि स
 स्थ रु का ना २ ह म वि वाहिनि वज्र वा नाहि रुद्रा वि न

दधमि श्रं धा ना ॥

॥ गणेशोक्ति निवा वरुण कलिया उज

सुमगु नू च वन ज्ञा ना ध्व २ सम या ज्ञान द रु लि ग्य वं म

सु व च
ले व क धा ना हि ॥

॥ १ गणेश क र दि ॥ वि हं ज रा य पि ज्ञा

मी नी र रु क वा दि र क म र रु रि न घ र ख द न डि व यी ॥ ५ ॥

मी नी उ क वि नू र व न रुं न जी आ यि र ती ग म रु व वि या य क म र

मं पि आ यि ॥

॥ ३ य रुं जी मी धी ले य न जा यि र म नि कू ल

वा रु या ले आ दि या न स मा ने ॥ २ ॥ सा स रु घ न धी र कं रि यु

नू रे र व नु स र्थ इ यि य क न र वा द ॥ ३ ॥ र न यि ग व जी

रु मी कं इ व वी ग र न व य ना वि मा भे उ र घ न उ वी ॥ ४ ॥

॥ २ गणेश क र दि ॥ वि वि हं वि रु नू च मा र दि म नि

वदन्त्यरेदवास्वगनतुवनरुदुक्कवृथा॥ ६॥ नावयिष्येन
मामिजीसम्बन्धीया २ व ऊ योगिणी गजोक्तिरेमावसमंगलाया॥
॥ व ऊ वा गहिनालिंगन कंथ २ कृति संविद्वीलेख्यस
म्बलमनुजा॥ ॥ गवकुरु न विम्बमासमूर ऊर्क र क उ व
नूनशायनशोयनरिष्मर्क॥ ॥ कादस तु ऊटलियावावि

३६॥१॥

प्रमुनपरविया

॥ ५०० ॥ रागादिरास ॥ उडिता न वलेया

पवन इति अथ मरुतमके काश रूपा ॥ वै ॥ धीव इति अथ

वध्विनिसंतप्रितारत्रवयनि वंरुनमीऊ वंरुतो॥ ॥ दिन

क र म धु ल म ध्व ग मार क र धा मृ त र म रू ना ॥ ॥ द ग्धा ज्ञा रि

गनरुययतिनिहंता रेखासूत्रनल्लोचनं नमृता ॥ ॥ गन

सर्वज्ञानात्मिका

यन्ति यवनं यन्ति गुप्तं क्लृप्तं रवञ्जवागारि उंरुसि यं नमः ॥

॥ २०२ ॥ रसागः कामोद ॥ श्रुतिनिहितं वासनात् खण्डकीयनमा

२ संताभारशागद्वखमीरुदन्दिश्यासाविशुवनमयाज्वलवि

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मनाथविस्वयायेन विवर्तकमपि विचारयमाणा ॥ १२ ॥

तिरवनागा उर्ध्वपुत्रः इत्युक्तं वाया वि इति किं च नारयि चित्त
 त्रधरा कं कवनयनाः वै वि संया ना गारुह सुवना ॥ ॥ माध
 वमाया पूरं २२ वृक्षोऽपि मावादि पाद आरु वना रम मवस
 माया नागविमोहाः हानवाय समहित देहा ॥ ॥ चला जार
 वना पुकावित मो विः कयू वना पू वमूनं मूनं का ना र सु वन मध

अथ निनि १३

गवन्दित वरना गाय स्या सुव २२ वरवि वा ॥ ॥ ६०३ ॥
 नाग ॥ कामा ॥ अथ निनि दिगजा नूनिल सम देहा २२ कवन गिनय
 न लिषम वदना ॥ ॥ ॥ वना हूं हूं वना हूं हूं २२ हूं हूं हूं जागत्रव
 लकाधनाया ॥ ॥ निविदी गयन युति ॥ तिगम (ग) २या सध
 प्रधायि तिगुवन ना ॥ ॥ रु निरु व वना २२ व उ मा वा २

अ-
कालसे जाग १२

माना वेद्युद्वागमकुरुयद्वद्वी ॥ विविधिवत्तमोति लंकदः
दा २ जगत् विवादि वलरुलदायकं ॥ **नागरुधुल**
दूकालसंजाग २० निलसमश्रुतिददा २ यो काल कल समश्रुति
काल कल न समश्रुता ॥ ५ ॥ जयकुमचल अनगमूनी खज
यासक ववा वि २ जगत् न भज गगया विगमहा कषलाया ॥

पञ्चाक्षर १५

अवनिनिस्त्रिवा मशानू धाव वदन विवाचना २ कव वाक स रु वरु
कव अवि ल वि प्रहंका ॥ ॥ बुद्धरु विरु व मधव माया दय दहन
स विवा २ दं द्यु नि यो छि ग नू व न स धा क व न वि प्रहंका ॥ वि
वि वि वत्त रु व क्ष विर वि ग दिव्य वत्त स मो वि २ जगत् वा छि ग सर्व स
मा रु सि दि वत्त रु ल दायकं ॥ ० ॥ **नागा का मा ॥** यद वि न दं

कास्तयकवमूलनि०० दुनीलायसमदहा शविष्ठाङ्गुलिगसृष्टिक
 जनं नवमकृगकाभाधिर्यं ॥ गनमाभिष्टोयुननुविनेहवसिन्धू
 गकचलीशविष्ठायागिनुवनवायिगवदातिहंसनकयवी ॥
 अनकशानगिनुवनविनंसवायिगवदातिहंसनकयवी ॥
 यासधव रवाविदासनवधनकयवी ॥ ॥ गनाहालनूपुजाका
 नवा

मयलरुषिगदहा रदंष्ट्राकवास्तुविमवदनागिरवनलायायच
 शुविना ॥ ॥ विनाधिर्यति सवरुयस्वनी युतयिसावादिमाकन
 मानसा रसवननयकादिविन्दुगया रसर्वसिद्धिमाकुरु लदं ॥ ० ॥
 गगनामा ॥ ॥ विजसंरुवस्वसमदहा नववसदाति ॥ नकचकन
 गारदादसरुजावदवदना ददसवरु लवक्तनके ॥ ॥ नमाभिष्टो

॥ विजसंरुव ॥ ॥

त्रिचक्रस्वरं मालारय एव तय ह न हो ॥ ॥ चतुनविसर्गियि ॥ ॥
 स्वरं च त्रिसंविनविनस्वरं ॥ चउचक्रयद क्रिनाय विवृता दविर्मयू
 नय ह लिग सिगा ॥ ॥ यस्मै सयूग आलिका लि यदा कान्ता श्रुति
 सत्यना ॥ द्वादसद विचक्रावा नमामि श्चक्रसम्भवा ॥ ॥ सन
 गुत्रचयत्वास्त्रियधार्य रनयिगिगमाक्र लिक् लिग्ना ॥ द्दानयगिग

मनादयं सद्यमनुललापिना ॥ ० ॥ वागागन्धर्वविनापि
लयनगुञ्जमनुलमदास्यकृते २६ विवडविनासिनि कत्वश्चन
का ॥ ६ ॥ विवयिभमदाचसगमकृदहन २ स्वर्गभाक्रमार्गसत्त्वः
उच्चावधार्थः ॥ विवडवाचादिआविर्गक्षगगन २ विगुवनद
वासनननदवि ॥ ॥ दृष्टापूजकगुञ्जसिधक अनूकनकि

विद नयन १७

रघुपतिनोदने १८

याश्च सत्त्वनननचिगागुडि, **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
लिनासर्षश्च नोयकुलदरु **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
योगानि यदग्राययचिले **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
वनाश्च न्यनाविनासिग वायभ्याविद्यादविद्यानविन्दू समजाज
नाग **कु** ॥ नमामिनिवाचमवनिन **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥

संयायिगाश्च सवद्वन्दुसमयगजयुक्तसिगजलजचन्दुसमयायि
गाग **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
शनिर्मलह **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
आनन्दययमानन्द विलमासदुत्तरुवानन्द **यश्च यथा** ॥ **यश्च यथा** ॥
विद्यासवन्नकादिनेमस्तस्यगुगनसम्यदयायिगा ॥ ॥

द्ववज्जकालचक्रावचक्रसम्यग्जननकागिमिद्रायावगगा २०
 दमअठियानयूक्तगिनिजावचक्रयुगुमदानवजानदू ॥ ० ॥
 नचमरुषि ॥ चक्रिद्रुनर्कधिरुचक्रमयलराधितम्यावचक्रदुन
 नमिलमानाश्मिलचक्रावचक्रिल्लस्यविल्लधिमगमधकमिदिव
 न्वनिल्लया ॥ ५२ ॥ युंनुसंश्रुद्वचममाचूकालाश्रगनाथन्याम

२६ विवि ३३

द्विनिमना वलविनासयिकयीस्य २८ अथ राजा हसलुलनाया ॥ ६ ॥
हर्जकालरुमनः जगत्सिवा सिधाल ॥ ॥ क सर्वनाथागना साने सर्वः
नाथागना नय सर्वधर्मागनिनासंद समलुनमर्क म ॥ ॥ ७ ॥
मियरनिर्वजन २ स्य २ सहजसुदु विनायाः जिनरु नययि स्य ॥
॥ सा नि धर्मागसं नु गं लान न च्छा विध्वधर्कः समन रुडा का

२७ अने ३७

यार्थः राजवमलुलमर्क म ॥ ॥ ८ ॥ अथ उजागिनि न लमयमला २
वजवावा हि न विगनकाल ॥ ॥ सर्ववक्र न सपरुः सर्वाचक्रः
नः विर्वजयः समन रुड वा नार्थ धावमलुल सायधि ॥ ॥ ९ ॥ अथ
रजाक्षक वनक वा नि २ जयं जयं नि नावर्क वा च्छा ॥ १० ॥ नामः
ललि ॥ ॥ अनूगन नथ नावकालरा वा लरुनूय विगिगः

विविक्तकनसं २ उं ४ आर्द्रकालवजामृष्टमूदकं सफस
धिरं खनामृत्तयं ॥ ६ ॥ चङामृगलस वाधिरुसदायकं
सर्वदिनव्यापितं सुरुजकनमश्जगगमचस्य द्विगं ॥ ७ ॥
त्यकच नारवं ससालनाभनविचक्रनूपं ॥ ९ ॥ वजपचमा
नूमय गन्धसंज्ञकं सवभ्यधिविषं पंचयूष २ द्रुं काल

मगुष्टमगवद्धं वजसथापितं विचार्दकलभं ॥ २ ॥
घटमखननसफ नूपराव जाहर्क मजकि निरुननूपं २
मनिति साधनन देज गाचर्क रानसत्वमानियद्रु दिङ्कि
ननं ॥ ३ ॥ पाद्याही आचमनं दानपूलसल समयाचक
प्रवसितं विवेदकनसं २ महावागद्विरुषं वाधिविगल

निर्माणो नादि वृत्त ३८

यसम्यासत्य ह्यानसत्त्वचक्रकारुणं ॥ ॥ ६०३ ॥
नागः रत्नवि ॥ निर्मानादिवृत्त मध्यागगकस्तसंप्रचामृगस्यपू
निवा २ रुद्रमयुरिस् पंचयनवनिनयभनजभनमिथापिः
गा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

उक्तवचनमिदं वचना ॥ १ ॥ पूर्वद्वयगगपञ्च उक्तसर्वो जिग
यचविंशतिरुदिगवृत्तकार्यं २ दक्षिणद्वयगगवृत्तस्य ३
वृत्तानि रूवसमवस्थाय विधिः ॥ २ ॥ पश्चिमद्वयगगवृत्तस्य ४
रिगधवचनसिद्धि वसुधा जिगा २ उक्तवद्वयगगवृत्तस्य ५
दिगह्यानश्च वृत्तिनिविस्त्वज्जनि ३ ॥ त्रय्याम्बुदिद्वयग

सं प्रदी ॥ ३

२ वि हि गो य न ३२

न ह्यन म्भ स उ पि ना नून म्भ म व र्ध न ज थ पि ना २ पू ष्य नि म्भ सि
न वि ष म न डि ना य न मा मि व ड स त्व सि ल स र्ध ना ॥ ४ ॥ ६०३ ॥ वा गः वा
वि नी त्रा य न च षु न न प म वि हा ना २ क न द्वा य ति थ म स्तु व हा
मे ॥ ५ ॥ हा म क लि यि या डू डू न हि च उ मा ना २ वा ग ध व मा हः
व दि न द्वा दि या न्वा म द हि न क न स न व ष्पा २ जा न यि व जा

३ क गो य ३

न व ज्ञा डू मि वि ना ॥ २ ॥ पु हा ष ष डू य यू न व जा २ न वि स मि च
उ या त्र वा र्वा व र्थ स्त ॥ ३ ॥ क र्त्तु वा व क न रु क न हा म २ पः
ऊ प व न घ न चि य क ता ॥ ४ ॥ ६०३ ॥ वा ग ती दि ॥ क मा यि ने धि
य वी ना म्भ म्भ नि ले क न का ना २ घ न क यि थि य हा यि व ऊ थि क नू ध क्रि या
यि न गो वा ॥ ५ ॥ म न यं ऊं क र्त्तु नू व ऊ री दि दि मा ना हि न व ऊ थि रा ॥

तहितनूखाऊनगाधमयनायिकुचिनयाधिरहावेकातेऊनयासिइ
इरवऊनयाधि॥ ॥ चउसमकस्तुनिसिज्ञाकर्षनवावनयाधि
रमलपंऊयिधनसानिकऊयतहितनूखाऊनयाधि॥ ॥ पुष्पनऊ
उकनंतं गुहागुहनमूध०० रनिलंमहत्रगचक्रावयिथातहिऊस
पानयाशी॥ ॥ ६००॥ **ह्यागाः यावलि**॥ सर्ववृद्धविवधमनुतादि

शुमानऊदनिरवऊजानीमनितकावेथलसिगुिचोचनि॥ ६॥ नना
मिवाळलिसिद्धिऊगिनिगनमदितारचूषनिधिसर्वसिद्धिऊगिनिगव
मदिता॥ ॥ आदितमधुलत्यऊसमनसदियमात्रासूयिन्वचारच
किरूधुलकविलोचकमेखवाविउषिता॥ ॥ कर्हिखत्यवमान
ऊदनीमकूटकमदिगंववाश्चधुमाशखलांगमदिताजोलाऊका

२४८ श्रीगि ४२

२ निर्मोनादि ४३

शानादभूयि रसमी वपलित रतिनाई मामिनी न रनी वंस्तो यम
कलयन्ति ॥ ५६ ॥ ॐ नमामि देवी श्री वरुह विनासिनी तिलय रुच
नख समान देवी रजदिया नष्ट रूगी वि काम रूप श्री रुत सुविशु
ई म धुल नित्य यन्ति ॥ ॥ वरुह लसनी वरुह लधर्म वरुह पाठन द
लसम्भाग च वरुह रजिं मत दच कमल महारुष च वरुह का वरुह श्री

किमप्यनया निबद्धं पूर्यंतं रजिमऊननीवज्जयागिनी॥ ॥ ऊयं
 रहाजालनसुसासारकवर्हिकपालसत्वांगधारी॥ ॥ ऊयं
 रबोडबोडसमाना नीलरणीवबोडनवसिबमाया॥ ॥ ऊयं
 गोषरुऊगतसंसाधेरपुनमामि श्रद्धयसंवाहलि॥ ॥ ५० ॥
 रनागः मालिनी॥ वज्जयागिनी हनुगमाया रजिउवननाथ रुहिमेषा

रवज्जयागिनी ४५

हा॥ ५॥ ॥ पिवयिभमहावसमहासूषकविशारवऊदवीरुलिया
 अनूहं वहाये॥ ॥ उर्ध्वनाभीगिहवकमलसंकागरदहिविवास
 शिषुवनसंरुदयि॥ ॥ उंऊयिभयं वमहासूषकविशारयं वसि
 लसिविऊवावनि॥ ॥ मतगुर्वचनपुसादचउल्लसिषेकर
 पाहस्यविसंसातसमूडा॥ ॥ ५१ ॥ रनागः मालिनी॥ वज्जयागिनी

वेतात्रि चन्द्राविद्वीरसिंधिनिष्ठाधिनिर्जन्मकडवंकिनि॥ ५५ ॥
 नमामि श्री यागं वलसिहाने स्ववि २ त्रिनिन्यतुद्वीति उवनययिस्व
 ॥ ॥ पूर्व उरु वयस्त्रि मदकिनदिगंद्वीरजकिनिधिनिचउ
 सिकवोऊनि॥ ॥ चउरदिगंडुमरुलनउद्वीरत्रिनिन्यतुद्वी
 नाचयिद्वी॥ ॥ रुविहववुक्ताः उरुवगमने २ पाउसजागी

नीसमवस्तुलाव्या॥ ॥ ६९२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ अतसिहसुमयूति
 दुरुपलासगा २ विविधिनलमतिमरुद्विउषिता॥ ५६ ॥ नाचयि
 श्री २ चलवीनारतनाचउआनन्दविनासयिअवना॥ ॥ जानउ
 तुरुवविम्वसुजादर्मना २ प्रह्नाजालिगनअद्वयमरुसुहं॥ ॥
 विनागचन्दयूतिरुवरुयंकनारतस्यनिरुक्तखरुतऊनिपास॥

॥ माय चतुर्दश्यानि विविधं हन्ता २ नृवि ससि रूपावत गगध वि
 वासयिञ्च वा ॥ ॥ ६९॥ ॥ रागः गव ॥ कामखत्यवधनदहि
 नकवर्हि रयायवनी पुल्लूडमानसचुदवि ॥ ॥ ॥ दवीनाच
 यिजकऊतिवऊआगीनी २ गिनिन्यउदवीतिउवनययिस्था ॥ ॥
 कावमए इयिपासनवंधिने २ रागद्वषभाहकवतिनऊदिने ॥

॥ सूचसूऊमदवीनिचऊनदवी २ सन्यापागुदवी मुन्यस्वरावेः
 ॥ ॥ मृष्टिसाहाचदवीकबूधकदवी २ माऊमार्गदवीसवीतऊ
 ननी ॥ ॥ ॥ ॥ रागः मधूमत ॥ यमादितादिदशउमिगुन्दलस
 नमममगुलसंस्थितलयने २ दाद ॥ उऊचउवदनसूसाहितवऊ
 वावाहिआलिंगमा ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ दहदिहसूचहमायसंभाधि

यावे २ वं दात्रा लिंगन म्द्वय संला वे नाचयि दाने श्रीसंमत्त वाया ॥

॥ कूलिसय छ गऊ चर्म त्रिस्तु वा क हिरु म ब्रह्म हितो २ मद्रूप ॥
चित कया नख त्वां गुपा सय व स्र वक्त सियें धया ॥ ॥ पंच दिन व
मम कृत आ वं रु तख त् मूडा आ व न वि शुषि ता २ आलिका विहः
यि आ विध चाय यि वा पु र म्म नि वा म न क र्म नू ॥ ॥ न व सि

२ अर्थो ५१

यमा बाल म् श्रीसंमत्त वादि य व कृति नि क बू ध ह दया २ ऊ न ऊ न मी
बु ठं रु पा य स व ना ग वं ति य व मा दि व ऊ गी ता ॥ ॥ ६७ ॥ वा
गः ७७ वि ॥ ऊ यं वा रु वि रु ऊ अ घ व नि २ स य व स्र वा स्र व ऊ ग त उ ध
वि ॥ ५ ॥ तं रु ग व ति पा इ य म ल म हि म धु ल नो प ल म्म नं २ का ला २
हा ज रु व न वि शुषि ता म ख व य छ उ ल्हा नी र ति सिं ति ध यं नि ति सि

नयना ॥ ॥ कचल्लिखट्यवग्रीवचूडनसिन्धुमागोरुखिखरवत्सा
 गवचमकूतकंभा ॥ ॥ सिन्धुसिन्धुवग्रीवकंऊवस्तुभारकस्तु
 विकर्पवताम्बुवस्तुवसा ॥ ॥ रुनयिस्तुवतवडवास्तुविदासा
 रणीवडदवीपुगादवीहूअपाया ॥ ॥ ६०३ ॥ **रागः धनाधी** ॥
 सर्वाङ्गानामहास्तुवडवास्तुवसा ॥ ॥ ६०३ ॥

हास्तुवसा चतुस्तुवसा इयिमविया ॥ ५ ॥ नपायलिनानपध्वनि
 आरगिउवननकस्तुवसा ॥ ॥ नपायलिनानपध्वनि
 नववदयनि ॥ ॥ अस्तुतारमधुलजदिया ॥ ॥ नपायलिनानपध्वनि
 यध्वनिरकचल्लिकयालखलांगध्वनिपुहाहानववदहा ॥ ॥
 दिगंवचमकूतकसिन्धुवग्रीवकंऊवस्तुवसा ॥ ॥

यवधविगीयनूदनवमिलमाला॥ ॥ सर्वतथगतऊ।ननिद
 वीविबहिनलवत्रलावारधीवऊऊगीनी चवनसिअगताभव
 निसमयसवजा॥ ॥ ५०॥ ॥ २॥ **नागः नान** ॥ सकनयुवनगुपूवऊ
 सत्वस्वयंरसवीचंकावपूरूमधुलसमूरुव॥ ५॥ ॥ इवीगीव
 पदसिमीरुकवास्वरुहंरअननवीदितानाथविऊमूत्यनं॥ ॥

अहाविस्मयाधर्मअहाविस्मयावाविअहाविस्मयागुफिवहा
 सोष्यसंरुव॥ ॥ अहासमनरुजाथअहास्वरुतसंगमंरअहा
 स्वरुमहागुडमहाकूचस्वरुवावहं॥ ॥ अहावायसमाहक
 अहागीतस्वरुनिमयंरअहावायाहिसंरुगमहातावसमावहं॥ ५॥
 ॥ **तिवजागीतंसमाफ** ॥ ॥ गुरुसंवत् १५०॥ मिमार्ग